देशी नस्ल (साहीवाल)
गाय का संरक्षण

प्रो. (डॉ.) एस. सी. गोस्वामी
प्रमुख अन्वेषक

डॉ. अरूण कुमार झीरवाल

डॉ. मोहन लाल चौधरी

पशु जैव विविधता संरक्षण केन्द्र

राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
बीकानेर

।। पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम् ।।

साहीवाल भारतीय उपमहाद्वीप की एक उत्तम दुधारू नस्ल है जो कि उष्ण कटिबंधीय जलवायु में अपनी दूध उत्पादन क्षमता के लिए सम्पूर्ण विश्व में विख्यात है। सन 2014 में पाकिस्तान के सरदार मोहमद आफताब खान वट्टो के जहांगीराबाद स्थित साहीवाल कैटल फार्म की जेबी नामक गाय ने पाकिस्तान में हुई एक दुग्ध प्रतियोगिता में 24 घंटे में 39.04 लीटर दूध देकर विश्व कीर्तिमान स्थापित किया। यह भारतीय उपमहाद्वीप की जलवायु में दूध उत्पादन के लिए सर्वश्रेष्ठ नस्ल है। इस नस्ल का निर्यात अफ्रीकी देशो के अलावा ऑस्ट्रेलिया तथा श्रीलंका में भी वहाँ की स्थानीय गायों की नस्ल सुधार के लिए किया गया है। यह नस्ल चिचड़ों तथा अन्य बाह्य परजीवियों के प्रति प्रतिरोधी होती है। यह नस्ल गर्म जलवायु को आसानी से सहन कर सकती है।

इसका उत्पति स्थल पाकिस्तान का साहीवाल जिला है तथा भारत में यह पंजाब के पाकिस्तान की सीमा से लगते फिरोजपुर, अबोहर एवं फाजिल्का जिलो में पायी जाती है। इसको मोंटगोमरी, लोला, लम्बी बार तथा मुल्तानी इत्यादि नामो से भी जाना जाता है।

शारीरिक विशेषताएँ :-

इसका शरीर गहरा, पैर छोटे एवं त्वचा ढीली होती है। शरीर का रंग सामान्यतः लाल, पीला लाल तथा हलके भूरे से लेकर गहरा भूरा होता है। सींग मोटे तथा आकार में छोटे, जमीन को छूती लम्बी पूँछ तथा (dewlap) गलकम्बल अत्यधिक गहरा तथा विकसित होता है तथा नर पशु में नेवल सीथ लटकदार होती है। नर पशु का समान्य वजन 522 किग्रा तथा मादा पशु का समान्य वजन 340 किग्रा होता है।

उत्पादन विशेषताए :-

यह उन्नत डेयरी नस्लों में से एक है। इसका औसत दूध उत्पादन 300 दिन के दुग्धश्रवण काल में 2150 किलो होता है जबकि कुछ सुव्यवस्थित फार्मो पर इसका दूद्य उत्पादन 4000 से 5000 लीटर प्रति ब्यांत तक आँका गया है। प्रथम ब्यांत की औसत उम्र 37 से 48 माह तथा दो ब्यांत का औसत अंतर 430 से 580 दिन होता है।

वर्तमान में साहीवाल नस्ल की गाय तेज़ी से विलुप्त होती जा रही है। इसकी विलुप्ति के प्रमुख कारण हैं :–

1 देश मे भारतीय गौवंश की उत्पादकता बढ़ाने के लिए अंधाधुंध क्रॉसब्रिडिंग।
2 किसान का अधिक दूध देने वाली विदेशी नस्लों के प्रति आकर्षित होना।
3 डेयरी फार्मिंग का एक उद्योग की तरह तेज़ी से विकसित होना।
4 अच्छे आहार तथा चारे की कमी।
5 आनुवांशिक रूप से उत्कृष्ट जर्मप्लाज़म की कमी।
6 नस्ल सुधार एवं संरक्षण मे लगी विभिन्न एजेन्सियो के अलग थलग प्रयास।
7 नस्ल सुधार एवं उनके संरक्षण मे जुड़ी गौशाला, मठों एवं गैर सरकारी संस्थाओं को सीमित वित्तीय सहयोग।

संरक्षण के उपाय :-

1. राज्यों को अपनी ब्रीडिंग पॉलिसी मे सुधार करते हुए देशी नस्लों के संरक्षण की ओर ध्यान देना चाहिए तथा देशी नस्लों की क्रॉस ब्रीडिंग को बंद करना चाहिए।
2. देश मे साहीवाल नस्ल के विशेष प्रजनन कार्यक्रम को लागू करना चाहिए।
3. साहीवाल नस्ल की ब्रीडिंग सोसाइटी इत्यादि संगठनो का गठन करना एवं उनको प्रोत्साहित करना।
4. साहीवाल नस्ल के संरक्षण में लगी विभिन्न गौशाला, धार्मिक मठों एवं गैर सरकारी संस्थाओं को आर्थिक सहयोग एवं प्रोत्साहित करना।
5. जो किसान साहीवल नस्ल के संरक्षण मे लगे हुए हैं उन्हे उचित पुरस्कार देकर सम्मानित करना।
6. जनजागरण के लिए साहीवाल नस्ल से जुड़ी जानकारियों वाली पुस्तकें, पोस्टर, लीफलेट इत्यादि का आमजन मे वितरण करना।
7. कत्रिम गर्भधान, एम्बरियो ट्रान्स्फर टेक्नालॉजी एवं प्रोजेनी टेस्टिंग तकनीक का साहीवल नस्ल के संरक्षण मे इस्तेमाल।
8. फ्रोजन सीमेन तथा फ्रोजन एम्बरियो वाले नेशनल जीन बैंक का निर्माण।

-: तकनीकी मार्गदर्शन हेतु आभार :-

प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत, कुलपति
राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर

प्रो. (डॉ.) बी. के. बेनीवाल, अधिष्ठाता
पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर

प्रो. (डॉ.) विजय कुमार, प्रमुख अन्वेषक
साहीवाल पशु प्रजनन परियोजना, राजुवास, बीकानेर

-:: सम्पर्क सूत्र ::-

प्रो. (डॉ.) एस. सी. गोस्वामी
विभागाध्यक्ष
पशुधन उत्पादन एवं प्रबन्धन विभाग, सी.वी.ए.एस., बीकानेर

डॉ. अरूण कुमार झीरवाल
सहायक अन्वेषक
(9461300587)

डॉ. मोहन लाल चौधरी
सहायक अन्वेषक
(9414603842)

मुद्रक : डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, बीकानेर मो. : 9784105819